Research Journal of Language, Literature and Humanities E-ISSN 2348-6252
Vol. **6(1),** 15-19, January **(2019)** *Res. J. Lang. Lit. Humanities*

भारतीय शास्त्रीय संगीत की शक्ती, आचारशास्त्र और आस्था का विश्वव्यापी स्वरूप

सुनिल बाबुलालजी पटके
संगीत विभाग, कला महाविघालय अकोला (मलकापुर), तह एवं जिला अकोला-४४४००४. महाराष्ट, भारत
patake.sunil@gmail.com

Available online at: www.isca.in, www.isca.me
Received 31st May 2018, revised 11th October 2018, accepted 15th December 2018

शोध सार

भारतीय शास्त्रीय संगीत सन्पूर्ण विश्व मे अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुका है । शास्त्रीय संगीत में जटील जिअल रोग को अच्छा करने की (Music Therapy) शक्ती है, पेड़ो को अच्छी तरीके से बड़ा करने की शक्ती है, यहँ सिध्द हो चुका है। आत्मशान्ती और मानसिक स्थिरता में संगीत अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शास्त्रीय संगीत में अनेक रागोंका अध्ययन किया जाता है और यहँ राग केवल दस थाटों से उत्पन्न होते हैं। प्रत्येक राग यहँ एक दुसरे से भिन्न होता हैं और इसमें राग नियमोंका, आचारशास्त्र का कठोरता से पालन किया जाता हैं। कुछ राग गंभीर होते हैं तो कुछ राग चंचल होते हैं। राग नियमोका कठोरतासे पालन करते हुये रागों का गायन किया जाता हैं और संगीत का आनंद लिया जाता हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत यहँ आस्था पर आधारीत हैं, प्रत्येक राग भक्ती मार्ग पर और बंदीशे परमात्मा के गुणगौरव, राजा महाराजाओं के गुणगान और धार्मिकता पर आधारीत होती हैं, प्रत्येक राग के माध्यम से मन को एकाग्र और केंन्द्रीत कर परमात्मा का चिन्तन, मनन कर परमात्मा के प्रती अपनी अपार श्रध्दा और आस्था प्रकट की जाती हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत का स्वरूप विश्वव्यापी हुँआ हैं और विश्व के प्रत्येक देशों के लोग भारतीय शास्त्रीय संगीत का अध्ययन कर नवनवीन अनुसन्धान कर रहे हैं। शास्त्रीय संगीत अब अनेक पंडीत, संगीत साधक, अध्यापकों के व्दारा ऑनलाईन क्लॉस के माध्यमो से और विदेशों में सेमीनार, कॉन्सर्ट, वर्कशॉप, कॉन्फरन्स के व्दारा भारतीय संगीत को विश्वव्यापी बना रहे हैं, संगीत से प्रेरीत विदेशी संगीत प्रेमी भारत के विविध क्षेत्र में वास्तव्य कर शास्त्रीय संगीत का अध्ययन कर शास्त्रीय संगीत की व्याप्ती विश्व में बिखेर रहे हैं। प्रस्तुत संशोधन निबन्ध यहँ भारतीय शास्त्रीय संगीत की शक्ती, आचारशास्त्र और आस्था का विश्वव्यापी स्वरूप का अध्ययन पर आधारीत हैं।

शब्द कुंजियां: भारतीय संगीत एक विश्वव्यापी स्वरूप।

प्रस्तावना

भारतीय शास्त्रीय संगीत यहँ एक शक्ती के रूप में विद्यमान है जो मनुष्य के आंतरीक मन और मस्तीष्क को पुनर्जिवित करके आनंद प्रदान करता है और अनेक मानसिक, शारीरिक व्याधी पर उपचार पद्धतीका रूप ले चुका है, विश्व के अनेक देशोने भारतीय शास्त्रीय संगीत महत्ता का अनुभव कर आत्मसाद करना शुरू किया है। भारतीय संगीत अध्ययन और अध्यापन में कठोर आचारशास्त्र का पालन किया जाता है। राग गायन करते समय राग नियमों के आधार से गायन किया जाता है। अगर राग नियमों से गायन नही किया जाये तो राग भंग हो जाता है। राग नियमो में वादी स्वर, संवादी स्वर, न्यास स्वर, वर्ज स्वर, विवादी स्वर, का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय शास्त्रीय संगीत यहें सबसे अधिक धार्मिक आस्था पर आधारित है, क्योकी शास्त्रीय संगीत का जतन और विकास अधिक प्रमाण में धार्मिक स्थालों पर ही हुआ। भारतीय शास्त्रीय संगीत को विश्व के अनेक देशोने मनशांती, आत्मशांती के रूप में स्विकार कीया है और भारतीय शास्त्रीय संगीत को विश्व व्यापी स्वरूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण सहायता की है।

शोध प्रविधी

प्रस्तुत शोध निबंध यहँ भारतीय संगीत की शक्ती, आचारशास्त्र और आस्था का विश्वव्यापी स्वरूप इस विषय पर आधारित है, यहँ विषय सामाजिक संशोधन और आधुनिक संशोधन पध्दती पर आधारित है। प्रस्तुत शोध निबंध में भारतीय संगीत की पुस्तके, प्रत्रिकाये, संगीत अंक और इंटरनेट से प्राप्त सहित का यथोचित प्रयोग किया गया है।

संशोधन की आवश्यकता

विश्व में सभी देशो में आस्था, मनोरंगज के लिये संगीत विद्यामान है। परंतु भारतीय शास्त्रीय संगीत यहँ विश्व में मनशांती, आत्मशांती, और उपचार पध्दती के रूप प्रसिध्द हो रहाँ है। प्रस्तुत शोध निबंध यहँ 'भारतीय शास्त्रीय संगीत की शक्ती, आचारशास्त्र और आस्था का विश्व व्यापी स्वरूप', इस विषय पर आधारित है। विश्व के अनेक देश भारतीय शास्त्रीय संगीत को अपना कर आनंद प्राप्त कर रहे है परंतु भारतीय लोग पाश्चात्य संगीत की तरफ आकृष्ट हो रहे है। भारतीय संगीत यहँ स्वत: ही जीवन धारा है। इस लिये भारतीय संगीत की शक्ती, आचार शास्त्र और आस्था इस विषय पर नए दृष्टीकोन से संशोधन करने की आवश्यकता संशोधनकर्ता को महसुस होतो है।

संशोधन का उद्देश और उपयोगिता

प्रस्तुत संशोधन का मुख्य उद्देश यहँ भारतीय शास्त्रीय संगीत का विश्व व्यापी स्वरूप आधुनिक युग के युवा पिढी, संगीत साधक, गायक, आध्यापक, आध्ययनकर्ता तक पहुचाना और भारतीय में शास्त्रीय संगीत का अधिक से अधिक प्रचार और विषय हो।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की शक्ती: भारतीय विचारधारा सदा से आदर्श की भावभूमी पर प्रवाहित होती रही है। तथा उसका प्रयोजन लोक-कल्याण रहा है। इसके कण-कण में राम, कृष्ण, बुध्द और भगवान महावीर जैसी अमर आत्मा समाई हुई है। सत्य, अहिंसा, ब्रम्हचर्य, अस्तेय और अपरिग्रह पंच महाप्रतो को इस देश के निवासी युगों से आत्मसात करते आ रहे है। आज विश्व के इस बर्बर युग में इसकी वाणी, इसका संगीत क्यों न विश्व कल्याणकारी होगी। अमेरिका जैसे सर्वसाधन सम्पन्न देश के निवासीयों का भारतीय योग एवं संगीत की और आकृष्ठ होने का यही एकमात्र प्रमुख कारण है। अमरिका के मनोविद सामू ने लिखा है की वहाँ के तीस प्रतिशत से अधिक लोग विक्षिप्लावस्था में है। मस्ती में झूमना, चिखना, चिल्लाना, वस्त्र फाड़ना, नशा करना इत्यादी आदतों से यह प्रतीत होता है की वे लोग असंतुष्ट, अतृप्त है तथा आत्मिक शांती के लिये भटक रहे है इस तनावपूर्ण से हटकर जब वे भारतीय संगीत की स्वरगंगा को अपने अन्दर समाहित करने की कोशिश करते है तो उन्हे अपूर्व शांती का आभास होता है यही संगीत का प्रथम लक्ष्य है। विश्व में सब दूर व्यस्तता है और इस व्यस्ताता से दुर होने के लिये व्यक्ति संगीत का सहारा लेता है। और इस संगीत से उन्हें धीमेपन व शांती का अनुभव होता है। शात रहणे की ताकत पैदा करती है।

संगीत का एक चिकित्सा पद्धती के रूप में उपयोग वैज्ञानिक एवं चिकित्सकीय आवश्यकताओं पर आधारित है। संपूर्ण विश्व ने भारतीय व संगीत को उपचार पद्धती के रूप में अपनाना शुरू कीया है और भारतीय संगीत में नये-नये अनुसंधान शुरू है।[1] भारतीय संगीत में नाद की सर्वोच्च शक्ति पर बल दिया गया है, जिसके माध्यम से संगीत चिकित्सक पद्धति के नाम से जानी गयी। शास्त्रो में भी उल्लेख मिलता है की ऋग्वेद और अथर्ववेद में निहित वैदिक मंत्र में उपचार शक्ति होती है और बहुत सारी बीमारियाँ इन मंत्रो तथा वैदिक। मृचाओं के उच्चारण से ठिक हो जाती है, जिसका एक कारण यह होता है की एक निश्चित पटल पर ध्वनी की आवृत्तियाँ वातावरण में एक निश्चित प्रभाव डालती है जो बदले में मनुष्य पर अपना प्रभाव डालती है। आदिकाल से मनुष्य औषधी एवं चिकित्सा पद्धती का संगीत से समन्वय कर मनुष्य का उपचार करता रहा है एवं संगीत द्वारा स्वास्थ्य लाभ तथा उसके तरोताजा रखने की विशेषतायें सर्व विदित है। राग शिवरंजनी स्मरण शक्ति बढ़ाने में सहायक है राग तोड़ी से तनाव एवं उच्च रक्त चाप को नियंत्रित किया जा सकता है। राग हिंडोल बसंत ऋतु की सम्पूर्ण मिठास और ताजावन भर सकता है। राग रागेश्वरी शांती निरवता के असर को पैदा कर सकती है जब की राग मल्हार गर्जन, आंधी तूफान और बरसात का प्रभाव पैदा कर सकता है।[2]

चरित्र विकासकलात्मक आस्वाद और व्यक्तित्व विकास, शैक्षिक उपब्धि, व्यवसायिक कौशल्य का विकास संगीत द्वारा किया जा सकता है।[3] मनोरोगियों पर संगीत इतना प्रभाव डालता है कि अन्य किसी उपचार विधि से संभव नहीं हो सकता। एक ही राग

प्रत्येक व्यक्ति पर समान उपयोगी सिध्द नहीं हो सकता हमें पहले कुछ ऐसे मुददे तय करने होंगे। मनोवैज्ञानिक या मनोचिकित्सक की सलाह से कुछ ऐसी प्रश्नावलियॉ देकर उनका संवेगात्मक स्वर मालूम कर लेना होगा।

मुम्बई के पं. शंशाक कट्टी ने "सुर-संजीवनी" नाम से संगीत चिकित्सा का प्रारंभ किया है। जिसके चार मुख्य अंग है। १) आधुनिक चिकित्सा अविष्कार (Modern medical inventions) २) भारत की परंपरा शास्त्रीय संगीत (Traditions of India Classical Music) ३) मनोदश की उचांई (Mood Elevation) ४) आर्युवेद के मैलिक सिध्दांत (Fundamental Principles From Ayurveda).

वैज्ञानिको ने शोध के माध्यम से यह स्वीकार कर लिया है की बायो एजर्नी के नाम से पहचानी जाने वाली चेतन-शक्ति का आधार शरीर है तथा यह शारीरिक-मानसिक दोनों क्षेत्रो को प्रभावित करती है। संगीत लहरो द्वारा तनावग्रस्त लोगों की सूक्ष्म शक्तियों को जगाया जा सकता है।[४]

"प्राचीन लेखको के साथ साथ चिक्तिसा अधिकारीओंने उस शक्ति पर फैलाया हैं, जो संगीत मनुष्य की कुछ बिमारीयों को ठिक करने के लिये हैं। वर्तमान काल के लेखक का मानना हैं की कुछ साल पहले, एक हॉस्पीटल था जहाँ संगीत के माध्यम से कुछ बिमारियों को ठिक करणे के लिये लंदन में स्थापित किया गया। यँहा पुछना उपयोगी होगा की उन दिलचस्प प्रयोंगो के परिणाम क्या हैं।"[५]

"लोकवाङ्मयामधून (Folk Literature) तर समाजाच्या धारणांचा, श्रध्दांचा आणि मनोधारणांचा सबळ पुरावा मिळतो आणि त्या समुहाच्या मानसिक विकासाचा आलेख काढणे ही शक्य् होते."[६]

देश-काल की सीमाओं का अतिक्रमण तो हम तभी कर सकते है जब हम रूचियों के स्त्र का आत्यंतिक रूप से अतिक्रमण करते हुए वस्तु मात्र के रूप से आव्हाद की प्रतत कर सकें।[७]

भारतीय संगीत के आचारशास्त्र

भारतीय संगीत के स्वरों का मुख्य गुण यहँ है की, केवल आवाज अथवा ध्वनी नही होता तो यहँ एक विशिष्ट् प्रकार का ध्वनी होता है। या वहँ नाद होता है, कुछ विशिष्ट आंदोलन संख्या के नियमित आवाज को नाद करते है। अर्थात नियमित कंपन संख्या यहँ नाद का मुख्य गुणधर्म है। इस गुणधर्म से नाद यहँ इतर आवाजों से अलग होता है। स्वर यहँ नाद से उत्पन्न होता है इस लिये यहँ लेकिक आवाज से अलग होता है। कोई भी स्वर यहँ सा है या रे या ग है इसके अंतर संबंध से सिध्द होता है।[८]

लय यहँ संगीत का अत्यंत महत्वपूर्ण दुसरा तत्व है।[९] 'श्रृतिर्माता लय: पिता'। अमरकोश ने भी 'लय: साम्यमथास्त्रि याम'। ऐसा लय को पुल्लिंगी शब्द बताया है। आचार्य सुधाकलश कहते है,

गीतं वाद्य तथा नृत्यं तालवर्जं न शोभते
तालाभावात्र मेल: स्यादमे लादन्वव स्थिती:
न रङ्म व्यवस्थातो विना रङ कुतो लय:
लय विना न सोख्यं स्यात तन्मूल ताल उच्चते।

रोम, अरब अथवा फारस ने जिस प्रकार भारत को सांगीतिक उपादान दिए, उसी प्रकार अरब और फारस एवं विशेषतया यूनान ने संगीत सामग्री भारत से ग्रहण की थी। 'सात स्वरों के ग्राम और तन सातको का ज्ञान भारत को यूनान से सदियों-पूर्व था और संभवत: यूनानियों ने इसे हिंदुओं से सीखा'।[१०]

भारतीय संगीत की एक विशेषता है की यहँ कही लिखा नही रहता. कलावंत यहँ स्वतंत्र, अपनी बुध्दी से राग की बढत करता है, बंदिश का नया अर्थ लगाना, राग की नई-नई स्वर अंलकार करता है।[११]

विश्व की अशांति और असंतुलन के प्रति विद्रोह तथा पुननिर्माण की इच्छा भी हमें पूर्ण मात्रा में मिलती है। गायन शैली सौंदर्य का मानवात्मा की उन्मुत्कि की कुंजी मानता है और उसका विश्वास है की सौंदर्यानुभूती द्वारा ही संसार अन्य संस्कारों, रूढ़ियो और स्वार्थों के बंधन से मुक्ति पा सकता है।[१२]

भारतीय शास्त्रीय संगीत और आस्था

भारतीय शास्त्रीय संगीत यहँ सबसे अधिक धार्मिक आस्था पर आधारित है। भारत यहँ एक धर्म प्रधान देश है, और धर्म के कुछ नियम उद्देश्य है और सभी धर्मों का मुख्य उद्देश्य उस सर्वोपरी, सर्वशक्तिमान ईश्वर की आराधना व उससे एकाकार,

साक्षात्कार होने का है, और इन सबको करने का माध्यम एकमात्र कला ही है जिससे यहँ सम्भव है, कलाओं में अत्यंत महत्वपूर्ण भुमि का यहँ भारतीय शास्त्रीय संगीत निभाता है। यहँ विचारणीय है की, भारतीय कलाकारों ने संगीत की आत्मा को कैसे पहचाना। भारतीय कलाकारों ने संगीत को आत्मसात किया, मोक्ष प्राप्ती व परमात्मा से संबंध स्थापित करने के लिये उनका मुख्य उद्देश्य ही यह था।

अत: उन्होने इस संगीत कला को भी उसी लक्ष्य की और उन्मुख किया। उन्होंने श्रृति, स्वर, ताल, राग, वाद्य, आदि से देवी-देवताओं के संबंध स्थापित किये उदाहरणार्थ उन्होंने शंकरजी के हाथ में डमरू व देवी सरस्वतीजी को स्वर की देवी, ज्ञान की देवी कहलाती है के हाथ में वीणा से उसका तात्पर्य निकाला। "नारदीय-शीक्षा में स्वरों को देवता और वर्णादि के नाम से विभूषित किया है।" "भगवान शंकर के डमरू की ध्वनी से 'अड्डण', 'ऋतृक', 'एओड', ऐआँच', 'हयवरट्', 'लण', 'त्रमडम्पनम्' इत्यादी से जहाँ पाणीनी के चाँदर सुत्रो का सुत्रपात हुआ वहाँ समस्त संगीत का प्रादुर्भाव हुआ।"

प्रतिशाख्यो में भी संगीत के वर्णन में देवताओं का नाम उल्लेखित है। सर्वविदित है की तांडव व लास्य नृत्य के आदि-गुरू भगवान शंकर और देवी पार्वती है। गोपियों के साथ वृंदावन में रासरचाने वाले बंसीधर, मुरली मनोहर कृष्ण तो मानो साक्षात संगीत का अवतार है। मुरली की कए तान पर गोपियों को बेसुध करदेने वाले बंशीधर की परंपरा ही तो आज का भारतीय संगीत है। संगीत की अधिष्ठात्री देवी माँ विणावाणी का भारतीय चिंतको ने बोहोत मनोहारी चित्र प्रस्तुत किया है। जिस संगीत रूपी वृक्ष को इतनी मधुरता व तपस्या, चिंतनधारा से सिंचा गया है उसके फल भला कडवे केसे हो सकते है। भारतीय दर्शन में यहाँ के कलाकारो को अंतदृष्टि प्रदान की है जिसके द्वारा वे संगीत की आत्मा पहचानने में समर्थ हुए है।

संगीत: संगीत अपने आप में एक वृध्द शब्द है संगीत शब्द में ही संगीत की परिभाषा समाहित है। अर्थात संग का अर्थ, साथ-संगत का अर्थ गायन तथा मन को आनंद प्रदान करने वाला यही संगीत की मुख्य परिभाषा है। संक्षेप में जहाँ गायन, वादन, नर्तन इन तीनों कलाओ का समावेश होता है वहि संगीत है संगीत क्या है? यह प्रश्न सामने आने पर हमारा जवाब होता है की संगीत एक कला है।

कला:
"कला मनोभावों की अभिव्यक्ति है।"
"कला चित्तरंजन का साधन है।"

'भजन भक्ति' अनन्य प्रकार के साथ भगवान का भजन करना ही भक्ति तत्व है। आराध्य के प्रति अनन्य प्रकार का प्रादुर्भाव तभी होता है जब भक्त निष्काम भक्ति-साधना में प्रविष्ट होता है। उसके लिए भक्त के आंतरिक कोई अन्य वस्तु प्राप्तण्य नही है। गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में अनन्य भक्ति का स्वरूप इस प्रकार है-
अर्थ न धर्म न काम रूचि, पद न चहऊँ निरबान।
जनम जनम रति राम पद, यह वरदान न आन।।[१३]

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने प्रवचन में भक्ति संगीत को एक महत्वूपर्ण स्थान दिया था। उन्हें प्रार्थना के कुछ भजन बहुत ही प्रिय थे, जिनमें नरसी मेहता का 'वैष्णव जन तो तेने चाहिए, जे पीर पराई जाने रे' सुरदास जी का 'वृक्षण से मत ले' मुख्य है। उनकी सर्वप्रिय राम-धुन 'रघुपति राघव राजा राम' तो रात-दिन ही उनके मुख पर पहनी थी। 'Lead Kindly Light' वाला क्रिश्चियन भजन भी उन्हे प्रिय था। वे संगीत के अनन्य प्रेमी थे। उनकी प्रार्थना में हर भाषा के भजनों को स्थान प्राप्त था। उनका कहना था कि जब स्वर-ताल-सहित भजनों का गान होता है, उस समय स्वर, ताल तथा भाव, तीनो का संयोग माधुर्य तथा ओज की वर्णनातीत अपूर्व स्थिती उत्पन्न कर देता है। वे नि:संकोच कहते थे की मेरे सामने आनेवाले राष्ट्रीय सामाजिक और राजनितिक विकट प्रश्नो की गृत्थी का सुलझाव बुध्दि की अपेक्षा प्रार्थना के द्वारा अधिक स्पष्टता व शीघृता से मिल जाती है। बापू की सरस एवं प्राणवान प्रार्थना में सम्मिलित होकर असंख्य जन मुग्ध एवं ईश्वर ध्यान में लवलीन हो जाते थे। विश्व के महान-से महान व्यक्तियों ने भी प्रार्थना को जीवन का सम्बल बताया है।[१४]

भारत और युरूप दोनों जगह पूजास्थान संगीत के प्रधान केंद्र रहे है। युरूप ने वाद्य यन्त्रों के संगीत में बहुत विकास किया है किन्तु यह विकास बहुत कुछ नया है। हेन्ड्री और बार्शम के अनुसार "रिनेसन्स से पहले विशुध्द वाद्य संगीत अपेक्षाकृत बहुत थोड़ा था।"[१५] भारत में वाद्य संगीत की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। इस प्रसंग में वीणा का नाम लेना काफी होगा।

निष्कर्ष

भारतीय शास्त्रीय संगीत यहँ संम्पूर्ण विश्व मे विराजमान है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की शक्ती यहँ Music Therapy के रूप में संम्पूर्ण विश्व में प्रचलीत और प्रसारीत हो रही है और सर्व मान्य है। शास्त्रीय संगीत यहँ शास्त्र नियमोके आधार पर ही शुध्द रूप में गाया बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत आत्मसाद करणे के लीये या आचरन में लाते हूये शास्त्र नियमोका अत्यन्त गहराई से अध्ययन करणा अनिवार्य है। शास्त्रीय संगीत यहँ आध्यात्म पर आधारीत है अनेक बंदिशे यहँ भगवान की आराधना और आस्था पर आधारीत है।

संदर्भ ग्रंथ

1. शर्मा स्वतन्त्र (2010). सौन्दर्य, रस एवं संगीत, प्रकाशन-अनुभव पब्लिशिंग हाऊस - प्रथम संस्क्रण, इलाहाबाद, 269.
2. शर्मा स्वतन्त्र (2010). सौन्दर्य, रस एवं संगीत, प्रकाशन - अनुभव पब्लिशिंग हाऊस - प्रथम संस्क्रण, इलाहाबाद, 269.
3. शर्मा स्वतन्त्र (2010). सौन्दर्य, रस एवं संगीत, प्रकाशन - अनुभव पब्लिशिंग हाऊस-प्रथम संस्क्रण,- इलाहाबाद, 269.
4. तारे विजय (2015). संगीत चिकित्सा, प्रकाशक - हिन्द् पॉकेट बुक्स्, प्रकाशन वर्ष - प्रथम संस्क्रण, दिल्ली, 79.
5. टागोर राजा सर एस.एम. (2006). हीस्टि ऑफ म्युझिक, ओरीयन्ट बुक सेंटर, फस्ट ऐडीशन, दिल्ली, 314.
6. कालभूत पुरूषोत्त्म (2007). लोकसाहित्य:स्वरूप आणि विवेचन, प्रकाशन-विजय प्रकाशन, पहिली आवृत्ती, नागपूर, 67.
7. कालभूत पुरूषोत्त्म (2007). लोकसाहित्य: स्वरूप आणि विवेचन, प्रकाशन-विजय प्रकाशन, पहिली आवृत्ती, नागपूर, 102.
8. ठकार सुलभा (2007). संगीत आणि सौंदर्यशास्त्र, प्रकाशन अक्षरलेणं प्रकाशन, द्वितीयावृत्ती-नोव्हेंबर, सोलापूर, 53.
9. ठकार सुलभा (2007). संगीत आणि सौंदर्यशास्त्र, प्रकाशन अक्षरलेणं प्रकाशन, द्वितीयावृत्ती-नोव्हेंबर, सोलापूर, 55.
10. गर्ग लक्ष्मीनारायण (1985). विश्व् संगीत अंक, संगीत कार्यालय हाथरस, हाथरस, 23.
11. चंहावरकर भास्कर (2011). वाद्यवेध आणि भारतीय संगीताची मूलतत्वे, प्रकाशन - राजहंस प्रकाशन, प्रा.लि., आवृत्ती दुसरी, पुणे, 191.
12. वाजपेयी सूनृत कुमार (1996). पाश्चात्य् सौंदर्यशास्त्र का इतिहास, प्रकाशन - नमन प्रकाशन, प्रथम संस्क्रण, नई दिल्ली, 304.
13. पाठक पंडित जगदीश नारायण (2004). 'संगीत निबन्ध्माला' प्रकाशक-पाठक पब्लिशिंग, संशोधित संस्क्रण - इलाहाबाद, 204.
14. गर्ग लक्ष्मीनारायण (1970). भक्ति संगीत अंक, प्रकाशन - संगीत कार्यालय, प्रकाशन-जनवरी, हाथरस, 43.
15. शर्मा रामविलास (2010). संगीत का इतिहास और भारतीय नवजागरण कसी समस्याएँ, प्रकाशन - वाणी प्रकाशन - प्रथम संस्क्रण, दिल्ली, 184.